IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

सनातन धर्म का स्वरूप एवं वर्तमान जीवन में इसकी प्रासंगिकताः एक दार्शनिक विमर्श ।

अमिता अवस्थी
डी० फिल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,इलाहाबाद ।

परिचय -

प्रस्तुत लेख में सनातन धर्म तथा वर्तमान जीवन में इस धर्म की क्या आवश्यकता एवं उपयोगिता है, इस विषय पर चर्चा कि गयी है । सनातन धर्म कि विशेषताओं के साथ उसके अन्य धर्मों के साथ पारस्परिक सम्बन्ध का भी उल्लेख किया गया है । सनातन धर्म को निरपेक्ष बताया गया है तथा विशेष धर्मों के द्वारा ही सनातन धर्म की प्राप्ति होती है । सनातन धर्म केवल हिन्दुत्व से सम्बन्धित न होकर अन्य धर्मों में भी इसकी सार्वभौमिकता और व्यापकता परिलक्षित होती है। धर्मशास्त्रों की यह मान्यता है कि प्रत्येक युग के अपने धर्म एवं नैतिक आदर्श है, सतयुग में तप, त्रेता में ज्ञान, द्वापर में या कलि में केवल दान या ईश्वर नाम कीर्तन ही श्रेष्ठ धर्म कहा गया है। इस लेख के माध्यम से सनातन धर्म के महत्व को दर्शाते हुए यह बताया गया है कि सनातन धर्म, सभी धर्मो का सम्मान करता है, वाद विवाद करता है एवं किसी भी धर्म की अवधारणा को चुनौती दे सकता है। ऐसा इसलिए संभव है क्योंकि सनातन धर्म किसी को भी अंतिम शब्द या अंतिम वाक्य नहीं मानता। एक ओर सनातन धर्म में सांस्कृतिक, धार्मिक ऋषि मुनि हुए जिन्होंने तप के बल पर अपने ईष्ट को अथवा ज्ञान को प्राप्त किया, वही दूसरी ओर इसी सनातनी धर्म की कई रूप जैसे वैष्णववाद, शैववाद, शक्तिवाद आदि शाखाओं के रूप में देखे जा सकते है। सनातन दर्शन को भी कई भागों में जाना जाता है जिनमें सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त एवं भौतिवादी दर्शन, पदार्थवाद आदि के रूप में जाना जाता है।

सनातन धर्म समावेशी प्रवृत्ति को अपनाता है और दूसरे धर्म या मान्यताओं में भी अविश्वास या उनकी आलोचना नहीं करता है, बल्कि सभी मतों का सम्मान करता है। अतः भारत या किसी अन्य देश में निवास करने वाले लोग जिन्हें हिन्दू कहा जाता है वो धार्मिक पुस्तकों के नजरिये से सनातनी है, परन्तु परोक्ष रूप से अन्य सभी विशेष धर्मों के मनुष्य भी सनातनी कहे जा सकते है जिनके अन्दर मानवता, दानशीलता, धार्मिक सहिष्णुता आदि गुणों का विस्तार है ।

कुंजी शब्दः सनातन धर्म, हिन्दूत्व, वैदिक धर्म, धार्मिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता, सनातन दर्शन, मानवता, सार्वभौम धर्म ।

उद्देश्य :-

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य सनातन धर्म को शुद्ध स्वरूप का दार्शनिक विवेचन करना है । सनातन के माध्यम से ईश्वर, आत्मा एवं मोक्ष का ज्ञान होता है। विज्ञान के लिए भी मृत्यु पहेली बनी है। सनातन धर्म में ईश्वर, मोक्ष और आत्मा को तत्व एवं ध्यान से जाना जा सकता है। इस धर्म के प्रारम्भ वर्ष की गणना करना कठिन है, किन्तु वर्तमान साक्ष्य के आधार

पर सनातन धर्म अनन्त काल से चला आ रहा है। सनातन धर्म उस परम कल्याण की बात करता है जिसकी आकांक्षा पूरे संसार को है। सनातन धर्म प्रयोगधर्मी है तथा प्रयोगधर्मिता के कारण एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है।

प्रस्तुत लेख में सनातन धर्म का वास्तविक उद्देश्य वर्तमान जीवन में दर्शाया गया है । सनातन धर्म की तुलना एकरूपवादी धर्मों से नहीं की जा सकती। यहाँ विविधता एवं विविधता का सम्मान दिखायी देता है। एक आध्यात्मिक बहुलवाद हम सनातनियों के धर्म में पाते है। वर्तमान में सभी धर्मों के सार, नैतिक मूल्य, आध्यात्म्य को मिलाकर एक सनातन धर्म का निर्माण होता है। सनातन धर्म सभी धर्मों के बीच एक सामंजस्य का धागा स्थापित कर सकता है।

सनातन धर्म -

सनातन का अर्थ है 'नित्य'। वैदिक धर्म का नाम 'सनातन धर्म' अत्यन्त ही उपयुक्त है। अन्य किसी भाषा मे इसका कोई वाचक शब्द नहीं मिलता। अंग्रेजी में 'रिलीजन' शब्द धर्म के उस भाव के लिए हुए है जो बहुत सीमित व संकुचित है पर सनातन धर्म इतना विशाल है कि इसमें हमारे जन्म के सभी विषयों और परिणामों का पूर्णतया समावेश होजाता है। भारतीय ज्ञान-गंगा के भागीरथ श्री वेदव्यास जी ने सत्य सनातन धर्म की व्याख्या करते हुए बड़े ही उदान्त और उदार विवेचना की है। उन्होंने महाभारत में कहा है-

"धारणाद् धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः ।
यत् स्याद धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः ।।
अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम ।
य स्यादहिंसासम्पृक्तः स धर्म इति निश्चयः ।।
प्रभवार्थाय भूतानां धर्म प्रवचनंकृतम्" ।।

अर्थात धारण करने के कारण 'धर्म' कहा जाता है। धर्म समाज के विभिन्न प्रणियों को उनके बलाबल के बावजूद धारण करता है। प्राणियों में परस्पर अहिंसात्मक सद्भावना के लिए 'जियो व जीने दो' के सिद्धान्त पर चलने के लिए धर्म का उपदेश दिया गया है। अतः जो अहिंसा से युक्त हो वही धर्म है ।

ऐसा धर्मात्माओं का निश्चय है। इहलोक में प्राणियों का अभ्युदय व उन्नति के लिए धर्म का प्रवचन किया गया है। अतः जो इस उद्देश्य से युक्त हो वही धर्म है ऐसा शास्त्रवेत्ताओं का निश्चय है।

सनातन धर्म को छोडकर और सभी धर्मों को दो भागों में बाँटा जा सकता है -

(1) वे धर्म जो पूर्वकाल में थे पर अब विद्यमान नहीं है ।

(2) वे धर्म, जो पूर्वकाल में नहीं था परन्तु अब है ।

परन्तु सनातन का अन्तर्भाव इन दोनों में से किसी में भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह धर्म अन्य धर्मो जन्म से भी पूर्व विद्यमान था एवं अब भी विद्यमान है। परन्तु भविष्य में ? इस प्रश्न प्रसंग में हमें "यज्जन्यं तदनित्यम्" अर्थात (जो उत्पन्न होने वाला है वह अवश्य ही नष्ट हो जायेगा)। यह प्राकृतिक नियम ध्यान में रखना पडेगा। इस नियम का कोई अपवाद

न अब तक हुआ है और न आगे होगा, जैसे सज्जनों व धर्म की रक्षा के लिए भगवान मानव रूप में अवतरित होते है। और अपना कार्य पूरा करके चले जाते है। इस प्रकार भगवान का अवतरित दिव्य शरीर भी इस प्राकृतिक नियम का अपवाद नहीं है।

धर्म की व्यापक आवधारणा किसी भी देश, काल व समाज के लिए सर्वथा ग्राह्य है इसीलिए इसकी उपादेयता स्वयंसिद्धि है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि सत्यसनातन धर्म ही ऐसा सार्वभौम धर्म है जिसका स्वरूप ही बड़े से बड़े भय से रक्षा करता है
गीता में भगवान की वाणी है-

"स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्" ।

यदि यह धर्म अपने वास्तविक रुप में जीवने में व्यक्त होने लगे तो मानव देवत्व को प्राप्त कर सकता है औऔर देवत्व प्राप्त सावन समाज के लिए कभी भी अकल्याणकारी या मानवता के अहित में नहीं हो सकता है। सनातन धर्म अनादि एवं अनन्त हैं क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति के समय से लेकर यह विद्यमान रहता है। यह सनातन इसलिए नहीं है कि वह सनातन ईश्वर द्वारा स्थापित है अपितु वह स्वयं ही सनातन या नित्य है क्योंकि यह प्राणिमात्र के स्वरूप में निहित है। यह प्रलयावस्था तक अस्तित्व में रहेगा, प्रलय के बाद भी यह नष्ट नहीं होने वाला है क्योंकि जब भी प्राणियों का जन्म होगा यह उन्हीं के अन्दर से स्वंयमेव प्रकट हो जाता है या यों कहे कि यह गुप्त रूप से तब भी अवस्थित रहता है। इस प्रकार सृष्टि के साथ ही यह लोगों की रक्षा के लिए उन्नति के लिए प्रकट हो

जाता है। अर्थात यह सनातन रूप में रहने वाला धर्म है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि दूसरे धर्म झूठे है, इसके विपरीत आशय यह है कि सभी धर्म किसी न किसी रूप में उस अन्तिम लक्ष्य तक मनुष्य को पहुँचाते ही पर वे किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा संस्थापित होने के कारण समय व देशकाल
विशेष से बंधे होते है और समय के साथ नष्ट हो जाते हैं। यह सनातन धर्म ही ऐसा है जो सृष्टिकाल में रहता है और अगले काल पुनः प्रकट हो जाता है ।

वर्णाश्रम व्यवस्था सनातन वैदिक धर्म की विशषता है यह युक्ति सिद्धि तथा विज्ञान सिद्ध है जैसे शरीर में हाथ, पैर, नाक, कान, आँख आदि की अपनी- अपनी विशेषताएं हैं और सबके अपने- अपने कर्तव्य है। इसी प्रकार आश्रम धर्म की भी परम उपादेयता है इसमें विपर्यास करने से जीवन में कठिनाई अवश्य ही आएगी, चूँकि आधुनिक समाज परम्परा व आधुनिकता दोनों को आश्रय देने की चेष्टा करता है जो कि अव्यावहारिक तब हो जाता है जब बिना किसी विशेष विधि या निषेध के माध्यम से इसे न अपनाकर स्वंयमेव इच्छित बना दिया जाता है। आशय यह है कि जहाँ आवश्यकता परम्परा की होती है वहीं है परम्परा का गुणगान करने लगते हैं और जहाँ बात आधुनिकता की आती है तो हम उसका पीछा करने लगते हैं। परिणामस्वरूप हम न तो वर्ण व्यवस्था और न ही आधुनिक व्यवस्था से समुचित समायोजन बना पाते है। इस प्रकार अपने अपने वर्ण व आश्रम धर्म के अनुरूप कर्तव्यों व धर्मों का अनुपालन कभी भी अप्रासंगिक नहीं हो सकता है। सनातन धर्म की अवधारणा अति व्यापक है। भ्रांतिवश इसे लोग हिन्दू धर्म समझ लेते है, जबकि हिन्दु धर्म केवल सनातन संस्कृति पर आधारित है। सनातन संस्कृति के अंतर्गत बहुदेववाद में विश्वास किया जाता है। सनातन संस्कृति आत्मा की अमरता में विश्वास करती है तथा पुनर्जन्म की अवधारणा को भी स्वीकार करती है। वास्तव में सनातन धर्म का कोई एक धर्म नहीं है। यह व्यक्तिगत विश्वास का विषय है कि किस विचारधारा हमेशा से चला आ रहा मानते है।

सनातन धर्म के अनुसार, इस सांसारिक जीवन का उपयोग इस दरिद्र जगत में भगवान के ध्यान में रहकर उच्चतम सत्य का अनुभव करने के लिए किया जाना चाहिए। धर्म, कर्म, जान और भक्ति के माध्यम से मनुष्य ईश्वर के समीप आता है और अपने आत्मा को ईश्वर के साध मिलान का प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में, मनुष्य अपने कर्तव्यों को निरंतर निभाते हुए आध्यात्मिक एवं आदर्श जीवन की ओर प्रगति करता है।

वर्तमान मानव जीवन मे सनातन धर्म की प्रासंगिकता -

सनातन धर्म अपने स्वरूप एवं विशेषताओं के कारण ही वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि वैदिक काल में था। सनातन धर्म मानवता का मर्म है। यह किसी विशेष मतवाद, उपासना पद्धत्ति अथवा आचार निष्ठा का नाम नहीं है बल्कि जगतपिता परमात्मा द्वारा लोकयात्रा को सुगम

बनाने के लिये बनाया गया अनादिकाल से अनन्तकाल तक प्रवर्तमान रहने वाला यह विधि- विधान है, जो देश काल एवं सभी सभ्य समाजों में सुखी और समृद्ध जीवन के लिए आवश्यक है

जब हम 'सनातन धर्म' की वर्तमान में प्रासंगिकता की बात करते हैं तब हमारी दृष्टि में सनातन धर्म के गुण व विशेषताओं, जिनको धर्मशास्त्रकारों ने राग, द्वेष विनिर्मुक्त, सत्यदृष्टा मनीषियों ने समझाया है कि मानव जीवन में सनातन धर्म का समुचित उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है। चूँकि धर्म की गति बहुत ही सूक्ष्म और गहन होती है जिसे न तो किसी एक परिभाषा में बाँध सकते हैं, और न आसानी से मानव जीवन मेंउतार सकते हैं। इसलिए आद्य व्यवस्थापक ने सनातन धर्म के निरूपण में दस प्रमुख लक्षणों की चर्चा की है जिससे महान धर्म संकेतित होता है, उन्होने कहा है-

"धृतिः क्षमा दमो स्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीविर्धा सत्यम क्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्" ।।

मानवेद्र मनु द्वारा प्रकट धर्म के धृति, क्षमा आदि दस लक्षण बहुचर्चित व सर्वज्ञात है ये सभी अपने स्वरूप में न हिन्दू है, न मुसलमान, न यहूदी व न इसाई और न अन्य कोई बल्कि ऐसे जीवन- मूल्य है जो दैवी सम्पत्ति के रूप में कल्याणकारी दिव्य गुणों के रूप में सर्वमान्य है इसीलिए सभी धर्म, सम्प्रदायों, मजहबों, पंथों व उपपंथो में इनका समान रूप से समादर है तथा सभी देशों व कालों में इसकी मान्यता व महिमा सर्वोपरि है। इन जीवन मूल्यों की महिमा की प्रशंसा करते हुए हमारे मनीषियों ने "धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा"" अर्थात धर्म सम्पूर्ण चराचर जगत का आधार है तथा "विश्व धर्मे प्रतिष्ठितम् अर्थात सब कुछ धर्म पर टिका है- जैसी सुविचारित घोषणाएं की है। इसीलिए महामति वेदव्यास ने तो यहाँ तक कह दिया कि न "धर्म त्यजेज्जीवितस्यापिः हेतोः। अर्थात जहान तो क्या जान की रक्षा के लिए भी धर्म नहीं छोड़ना चाहीए क्योंकि 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षतः। यह भूतार्थ वचन अनुभूतार्थ भी है। भागवत में सबको संतोष देने वाले सत्य, दया, तप, शौच, शम आदि तीन लक्षणों से युक्त जिस धर्म की चर्चा हुयी है वह भी अपनी व्याप्ति में सार्वभौम व सनातन है ।

सनातन धर्म पूर्णरूपेण कल्याणकारी है। यही मनुष्य को ब्रह्म तक पहुँचाता है। इस धर्म के मार्ग पर चलने वाला अपने नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त सच्चिदानन्द स्वरूप का साक्षात्कार करने परमात्मा के साथ एक हो जाता है। जिस नीति तथा धर्म के आचरण द्वारा परस्पर संघर्ष न हो, उसी का अनुष्ठान करना

चाहिए। इसी प्रकार शिक्षक, विद्यार्थी, शासक आदि को तथा पिता, माता, पुत्रादि सबको अपने अपने धर्म को समझकर ठीक - ठीक उसका पालन करना चाहिए। सभी को दूसरे के अधिकारों की रक्षा
तथा स्वकर्तव्य पालन करना चाहिए। कर्तव्यत्यागी तथा अधिकार लिप्सु होना समाज तथा देश की शान्ति में बाधक होता है। कर्तव्यपरायण होने पर अधिकार स्वयं प्राप्त हो जाता है। यही सनातन धर्म का सच्चा स्वरूप है जिसे अपनाकर प्राचीन भारत बहुत उन्नत था परन्तु आज जब उसे इस धर्म की अवहेलना कर दी, तब वह दिनोंदिन अवनति की ओर चलाजा रहा है जो धर्मशास्त्र को छोड़कर स्वेच्छापूर्वक काम करता है उसकी अवनति अनिवारणीय हो जाती है ऐसे व्यक्तियों के विषय में गीता में कहा है-

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।

न सिद्धिमताप्रोति न सुखं न परा गतिम् ।

तस्याच्छज्ञस्त्वं प्रमाण ते कार्याकार्यव्व स्थितौ ।

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहाहंसि ।। महाभारत-16/23-24

अतः यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए कि धर्मानुसरण में ही शान्ति है, मुक्ति है। धर्मपरायण व्यक्ति को अपने सारे धर्म कर्मों को ब्रह्मार्पण करना चाहिए. ऐसा ईशोपनिषद में वर्णित है -

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतः समाः ।

एवं त्वपि नान्यथेतो स्ति न कर्म लिप्यते नरे' ।। ईशा - 2

एक ही अमृत परत्मात्मा के पुत्र होने के ज्येष्ठ परिवार के सदस्य हैं। सारी वसुधा ही अपना कुटुम्ब है, धर्मी तो सबके कल्याण की ही कामना करते हैं-कनिष्ठ समान हम सभी एक 'वसुधैव कुटुम्बकम्" सनातन धर्मी तो सबके कल्याण की ही कामना करते हैं-

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुखभाग्भवेत् ॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः । मनुस्मृति

इस प्रकार सनातन धर्म ही वास्तव में कल्याणकारी है, यही सार्वभौम मानव धर्म है। इसके बिना विश्व शान्ति असंभव है। सनातन धर्म का स्वरूप इतना उच्च व श्रेष्ठ है कि इसकी तुलना में संसार का कोई भी धर्म नहीं आ सकता है। अतः रक्षा एवं शान्ति की कामना करने वालों को धर्म की रक्षा करनी चाहिए।

धर्मे वर्धति वर्धन्ते सर्वभूतानि सर्वदा ।
तस्मिन ह्यन्ते तस्याद्धर्म न लोपयेत् ॥ महाभारत -90/

सभी प्राणी धर्म की वृद्धि होने पर बढ़ते हैं तथा धर्म के घटनेपर क्षीण होते हैं अतः धर्म को कभी न लुप्त होने दे।

सनातन धर्म अर्थ एवं उद्देश्य धर्म, नैतिकता, सदभाव समानता, शांति एवं सहयोग के माध्यम से समाज के विकास और परम धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार जाने का प्रयास करने को संकेत देता है। यही आधुनिकता समाज में व्याप्त कुरीतियों, भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण, अनैतिकता एवं लिप्सा जातिवाद आदि से हमें मुक्त करा सकता है। सनातन

धर्म हमें हमारे स्वभाविक मानवीय स्वरूप जिसमें सच्चाई, ईमानदारी, भाईचारा, परोपकार, अहिंसा, नैतिकता, दानशीलता, सहिष्णुता, मानवता आदि को बनाये रखने और सद् गति दोनों प्रदान करता है। यही जीवन का श्रेय व प्रेम दोनों माना जा सकता है ।

निष्कर्ष-

अन्ततः हम देखते है कि सनातन धर्म एक अनुभूति है, जो 'शाश्वत' है, जिसका सभी लोगों को वर्ग, जाति, सम्पदाय ककी परवाह किये बिना पालन किया जाना चहिए। धर्म के अनुसार दायित्व अलग- अलग होते है लेकिन, सनातन धर्म में ईमानदारी, जीवित प्राणियों को नुकसान पहुंचाने से बचना, पवित्रता, परोपकार, दया, धैर्य, सहनशीलता, आत्म-संयम, उदारता एवं तपस्या जैसै मूल्य सम्मिलित है। यह एक सिद्धान्तों का समूह है, जिनमें सभी धर्मों के सारतत्व सम्मिलित परिलक्षित होते है। सनातन धर्म केवल आस्था का विषय भी नहीं है, बल्कि जीवन का विज्ञान है। इसके मिथकों और कथाओं को आज के संदर्भ में वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना हमारी जिम्मेदारी है। यह न केवल युवाओं के उनकी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ता है, बल्कि उन्हें यह समझने में भी सहायता करता है कि उनके जड़े कितनी गहरी एवं प्रासंगिक है। इसकी एक समावेशी संस्कृति है जो आस्था एवं विज्ञान दोनों के अनुरूप है। यह सुधार विकास के लिए सक्षम बनाता है। इसमें परम आध्यात्मिक ज्ञान है, जो मनुष्यों को मुक्त करने में सक्षम है। यह सार्वभौमिक, मानवीय और आध्यात्मिक सिद्धान्त की वृद्धि करता है। सनातन धर्म मानवता का पोषक है ।

सनातन धर्म वर्तमान जीवन में मानव के लिए अति महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का समूह है, जो मानव को उसके उद्देश्य एवं पूर्ति की भावना को विकसित करने में सहायता प्रदान कर सकता है। यह एक विशेष धर्म (हिन्दू धर्म) का अंग न होकर सम्पूर्ण विश्व को स्वीकार्य होना चाहिए। सनातन धर्म ने मानव तंत्र का इतनी गहनता से अध्ययन किया है, यदि इसे उचित ढंग से समाज के सामने प्रस्तुत किया जाय तो यह संसार का भविष्य होगा एवं सभी धार्मिक या साम्प्रदायिक कलह की समाप्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। सनातन धर्म कोएक धर्म न मानकर बल्कि एक अनुभूति समझकर मानव अपने जीवन में उद्देश्य और दिशा की भावना प्राप्त कर सकते है। इसके आंतरिक मूल्यों,

विश्वास को दैनिक जीवन में सम्मिलित कर हम एक आदर्श मानवता का विकास कर सकते है, क्योंकि सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की विशाल भावना, भारतीयता और सनातन धर्म के संदेश में समाविष्ट है ।

Copyright@ijaer.org

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. 'कल्याण', (पत्रिका), गीता प्रेस, 2009, गोरखपुर।

2. 'श्री मदभागवत', गीता प्रेस, 2009, गोरखपुर।

3. 'मनुस्मति', गीता प्रेस, 2009, गोरखपुर ।

4. 'महाभारत', गीता प्रेस, 2009, गोरखपुर

5. ऋषि जैमिनी, 'मीमांसा सूत्र', 2nd Edison, 2007 |

6. 'ईसादि नौ उपनिषद', गीता प्रेस, गोरखपुर, 2015, भारतीय कला प्रकाशन ।

7-राम चरित मानस, 'बाल काण्ड', प्रकाशक मोतीलाल जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर।

8- मिश्र, डॉ० बलदेव प्रसाद, 'तुलसी दर्शन', 1967, साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

9-भारतीय, दयानन्द, 'अंडरस्टैंडिग हिन्दूइज्' नई दिल्ली, 2019, मुंशीराम मनोहरराम पब्लिशर्स।

10- Panda, R. K., 'Hinduism in india', New Delhi, 2014, Bhartiya Kala Prakashan.

12-भगवद् दर्शन (मासिक पत्रिका), 2004, श्री उज्जवल जाजू, मुम्बई।

13 मालवीय पंडित, रामेश्वर प्रसाद, 'गीता अवगाहन', 1990, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।